पाठ 17. भाग्य का खेल

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य कर्म करने की प्रधानता पर बल देना है। बच्चों को यह समझाना है कि हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारे भाग्य में जो होगा वह हमें मिल ही जाएगा। इस प्रकार की सोच रखने से हम कभी प्रगति नहीं कर सकते। ऐसा सोचने के स्थान पर हमें अपने काम को पूरी मेहनत और लगन से करना चाहिए क्योंकि कर्म करना मनुष्य का पहला कर्तव्य है।

पाठ का सारांश

रायगढ़ राज्य में राजपाल और वीरपाल नाम के दो मित्र थे। राजपाल का मानना था कि यदि राजा गोपाल उसपर कृपा कर दें तो उसकी स्थिति अच्छी हो जाएगी। जबकि वीरपाल कर्म करने में विश्वास रखता है। एक दिन दोनों मित्र राजदरबार में जाकर अपनी-अपनी कविता राजा गोपाल को सुनाते हैं। राजपाल अपनी कविता में राजा को अपना अन्नदाता बताता है जबकि वीरपाल कर्म का गुणगान करता है। राजा राजपाल से प्रसन्न और वीरपाल से नाराज़ हो जाते हैं। राजा की आज्ञा से सेनापति वीरपाल को चावल और दाल दे देता है जबकि राजपाल को कद्दू और चावल दे देता है। कद्दू में सोने की मोहरें छिपाकर रखी गई थीं। राजा की आज्ञा लेकर वे दोनों खाना बनाने तथा खाने के लिए चले जाते हैं। राजपाल मेहनत से बचना चाहता है इसलिए वह वीरपाल को कद्दू देकर बदले में दाल ले लेता है। इस प्रकार सोने की मोहरें वीरपाल को मिल जाती हैं। शाम को जब वे दोनों राजदरबार में पहुँचते हैं तो सारा मामला समझ लेने के बाद राजा और दरबारी खूब हँसते हैं। सभी समझ जाते हैं कि मेहनत के बिना कुछ नहीं मिलता।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को मौन पठन करने के लिए कहें। बच्चों से पूछें यह कहानी पढ़ने के बाद आपने क्या सीखा। उन्हें बताएँ–

- किसी भी काम को करते समय मेहनत करने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए।
- हमें स्वयं पर भरोसा रखना चाहिए।
- समझाएँ, हमें अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए, उसका परिणाम कैसा होगा इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।